# क्लासिक रूसी कहानियाँ

चयन-अनुवाद

डॉ. बालमुकुन्द नन्दवाना

# क्लासिक रूसी कहानियां

चयन- अनुवाद

## डॉ. बालमुकुन्द नन्दवाना

*प्रकाशक: नॉटनल*

*प्रकाशन: फ़रवरी, 2024*

*© डॉ. बालमुकुन्द नन्दवाना*

# अनुक्रमणिका


हुकुम की बेगम 4

*अलेक्सांद्र एस पूश्किन*

नाक 25

*निकोलाई वी गोगोल*

ज़िले का डॉक्टर 71

*इवान एस तुर्गेनेव*

क्रिसमस ट्री और शादी 89

*फिओदर एम दोस्तोयेव्स्की*

दो अफसर और मुज़िक 105

*एम वाई साल्टीकोव-शाद्रिन*

सिग्नल 121

*व्सेवोलोद एम गार्शिन*

शर्त 140

*अंतोन पी चेख़व*

ईश्वर सत्य को देखता है लेकिन इंतज़ार करता है 154

*लिओ एन तोलस्तोय*

नौकर 171

*एस टी सेमियोनोव*

प्रेमी 185

*मैक्सिम गोर्की*

आक्रोश - एक सत्य कथा 197

*अलेक्सांदर आई कुर्पिन*

भाग्यवादी 227

*मिखाइल वाई लार्मोंटोव*

# हुकुम की बेगम

*अलेक्सांद्र एस पूश्किन*

घुड़सेना के अफसर नारौमोव के घर पर जुआ खेलते हुए सर्दी की पूरी रात गुजर चुकी थी. सुबह पाँच बजे थके-हारे खिलाड़ियों को ब्रेकफास्ट दिया गया. विजेताओं ने बड़े चाव से खाया; हारे हुए खिलाड़ियों ने अपनी प्लेटें खिसका दीं और चेहरे लटका कर बैठे हुए थे. अच्छी मदिरा के प्रभाव में, हालांकि, कुछ देर में सामान्य बातचीत होने लगी.

“हाँ तो सौरिन, तुम्हारा कैसा रहा? मेजबान ने पूछा.”

“ओह! हमेशा की तरह मैं हारा. मेरा भाग्य मेरे साथ नहीं है. मैं चाहे कितना ही शांत-चित रहूँ, मैं कभी नहीं जीतता.”

“हरमन, तुम पत्तों को कभी हाथ नहीं लगाते, ऐसा क्यों?” उनमें से एक ने इंजीनियरिंग कोर के युवा अफसर को संबोधित करते हुए टिप्पणी की. “तुम यहाँ सारी रात, सुबह के पाँच बजे तक हमारे साथ हो, लेकिन तुम न तो खेले और न ही तुमने दाँव लगाया.”

“मुझे खेल बहुत दिलचस्प लगता है,” जिस व्यक्ति को संबोधित किया गया था, उसने जवाब दिया, “लेकिन मैं अनिश्चित विलासिताओं के लिए जीवन की आवश्यकताओं की बलि देना उचित नहीं समझता हूँ.”

“हरमन जर्मन है, इसलिए मितव्ययी है; इससे यह बात समझ में आती है,” टोम्सकी ने कहा. “लेकिन जिसे मैं बिलकुल नहीं समझ पाया वह मेरी ग्रैंडमा है, काउंटेस अन्ना फेदोरोवना.

“क्यों?” कई आवाजें एक साथ उठीं.

“मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि मेरी ग्रैंडमा क्यों कभी जुआ नहीं खेलती है.”

“मुझे इसमें कोई असाधारण बात नहीं लगती कि एक अस्सी साल की महिला जुआ खेलने से मना करती है.”, नारौमोव ने टोका.

“क्या तुमने उनकी कहानी सुनी है?”

“नहीं…”

“अच्छा तो फिर सुनो. आज से साठ साल पहले मेरी ग्रैंडमा पेरिस गयी थी. वह एक सेलेब्रिटी थी. उन्हें ‘मास्को की वीनस’ के नाम से पुकारा जाता था. वहाँ उनकी एक झलक पाने के लिए वहाँ सड़कों पर भीड़ इकट्ठी हो जाती थी. उस समय शाही महिलाएँ फैरो (एक प्रकार का ताश का खेल) खेला करती थीं. एक